प्र ख्या प न

" नई रचना के नये कवि – सर्वेश्वर दयाल सक्सेना "

यह लघु – शोध – प्रबंध मेरी मौलिक रचना है, जो एम. फिल् के लघु– शोध प्रबंध के रुपमें प्रस्तुत की जा रही है । यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है ।

सातारा

दिनांक :– 15 मार्च, 93.

हस्ताक्षर

सौ. शकुंतला सुधाकर आढाव

अनुसंधाता

डॉ. शिवाजी विष्णू निकम
एम.ए.पी एच.डी.
स्नातकोत्तर अध्यापक एवं शोध निर्देशक
हिंदी विभाग
छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा (महाराष्ट्र)

प्र मा ण – प त्र

मैं डॉ. शिवाजी विष्णू निकम, स्नातकोत्तर अध्यापक एवं शोध-निर्देशक, हिंदी विभाग, छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा यह प्रमाणित करता हूँ कि सौ. शकुंतला सुधाकर आढाव ने शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्. फिल् (हिन्दी) उपाधिके लिए प्रस्तुत लघु- शोध-प्रबंध " नई रचनाके नये कवि- सर्वेश्वर दयाल सक्सेना" मेरे निर्देशन में बडी परिश्रम के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया हैं । जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किए हैं , मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं । मैं सौ. शकुंतला सुधाकर आढाव के प्रस्तुत शोध कार्य के बारेमें पूरी तरह से संतुष्ट हूँ ।

सातारा

दिनांक :- 15 मार्च, 93.

हस्ताक्षर

डॉ. शिवाजी विष्णु निकम

निर्देशक

– अ नु क्र म णि का –

अध्याय–।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना– जीवनवृत्त, व्यक्तित्व, एवं कृतित्व 1 - 28

1. उद्घोष.

2. नयी कवितामें सर्वेश्वर का योगदान.

3. तीसरे सप्तक के कवि

4. जीवनवृत्त

जन्म तथा बचपन

माता– पिता

शिक्षा

नौकरी

विवाह

गार्हस्थ जीवन

आर्य समाजी

स्वभाव

मृत्यु ।

5. व्यक्तित्व

1) मान्यवर व्यक्तियोंकी नजर से सर्वेश्वर

2) नयी कवितामें उनका व्यक्तित्व

3) सर्वेश्वर की विचारधारा ।

6. कृतित्व

1) कविता

2) बाल कविता

3) कहानी

4) उपन्यास

5) नाटक

6) एकांकी ।

7. कविताओंका संक्षिप्त विवेचन एवं परिचय

1) काठ की घाटियाँ

2) बास का पुल

3) एक सूनी नाव

4) गर्म हवाएँ

5) कुआनो नदी

6) खूँटियों पर टँगे लोग।

8. निष्कर्ष

अध्याय -2 सर्वेश्वर दयाल सक्सेना - व्यक्तिवादी कवि 29-51

1) व्यक्तिवाद की परिभाषा

2) व्यक्तिवाद के रूप

3) हिंदी काव्यमें व्यक्तिवाद और अतृप्त - वासना

4) विविध समीक्षकों के मत

5) नयी कविता में व्यक्तिवाद

6) व्यक्तिवादी चेतना

7) व्यक्तिवाद की प्रवृत्तियाँ और वैयक्तिकता

8) वैयक्तिक यथार्थवाद

9) वैयक्तिकता तथा सामाजिकता

10) सर्वेश्वरजीके विविध काव्योंका व्यक्तिवादी की रूपमें परामर्श

11) निष्कर्ष।

अध्याय-3 सर्वेश्वर दयाल सक्सेना - भाव प्रगव कवि 52- 69

1) भाव-विवेचन

2) विरह का भाव

3) करुणा एवं संवेदना के भाव

4))मानवीय मूल्य-भाव

5) प्राकृतिक भाव

6) भावुकता के भाव

7) मध्य-वर्गीयों की भाव-भंगिमा

8) अर्थहीनता का भाव

9) कृत्रिम प्रगतिका भाव

10) आदमियत के भाव

11) प्रणयपरक एवं प्रेममूलक भाव- व्यंजना

12) व्यक्तिगत भाव

13) निष्कर्ष।

अध्याय-4 सर्वेश्वर दयाल सक्सेना - सम-सामयिक चेतना के कवि 70- 87

1) सामाजिक सामयिक चेतना

2) प्रयोग और अन्वेषा की नयी चेतना

3) लोकहितवादी चेतना

4) सांकृतिक चेतना

5) सम-सामयिक भाव-बोध चेतना

6) सम-सामयिक राजनीतिक चेतना

7) संवेदनशील चेतना

8) सर्वेश्वरजी के कविताओंका परामर्श

9) निष्कर्ष।

अध्याय-5 सर्वेश्वर दयाल सक्सेना - व्यंग्य कवि 88- 110

1) व्यंग्यशीलता प्रमुख विशेषाता

2) व्यंग्य एक गुण

3) सर्वेश्वर जी के व्यंग्य - काव्य की सीमाएँ

4) नई कवितामें लोकतंत्र का आधार -व्यंग्य

5) राजनीतिक व्यंग्य

6) सामाजिक व्यंग्य

7) युध्द विषायक व्यंग्य

8) आधुनिक सभ्यता के व्यंग्य

9) भ्राष्टाचारी व्यंग्य

10) नकली शांतिपर व्यंग्य

11) परामर्श।

अध्याय– 6 सर्वेश्वर दयाल जी का काव्य सौष्ठव 111- 122

1) काव्य सौष्ठव का परिचय

2) प्रतीक विधान

3) बिम्ब विधान

4) नए उपमान

5) विविध भाषा के प्रयोग

6) सर्वेश्वर जी की भाषा शैली की कमियाँ

7) परामर्श।

अध्याय –7 समापन। 123- 130

भूमिका

अपनी सशक्त सौंदर्य-चेतना के बावजूद छायावाद रुग्ण एवं संत्रस्त होकर अल्प समय में ही तिरोहित हुआ । इसका एक मात्र कारण यह था कि उसकी सुकुमार, संगीतमय शाब्दावली, युग-जीवन की जटिलताओं एवं ऊहापोहोंको अभिव्यक्त करने में असमर्थ हो चुकी थी । अतएव रचनाकारों को अभिव्यक्त के साथ अन्य प्रकार खोजने की आवश्यकता महसूस हुअी । प्रकारान्तर से तमाम विसंगतियों के निराकरण के संकल्प को लेकर नई कविता उपस्थित हुई । कई सार्थक तत्त्वों को आत्मसात करती हुई परिवेश एवं देशांतर के दबाव से नई कविता ने एक विराट क्षितिज का निर्माण किया जहाँ व्यक्तिवर्दि दौर के साथ साथ सामाजिक सरोकार एवं राजनीति की गंध मिल जा सकती है ।

सन 1943 ई.में अज्ञेय के संपादन में तारसप्तक का प्रकाशन हुआ और उन्होंने तार-सप्तक के माध्यम से आधुनिक कविताके क्षेत्र में प्रयोगवादी विचारधारा को जन्म देकर एक नए युग का सूत्रपात किया, जो आगे चलकर "नयी कविता" के रूपमें परिणत हो गया । नयी कविता का प्रारंभ भी वैसे अज्ञेयद्वारा संपादित दूसरे सप्तक तथा तीसरे सप्तक की कविताओंसे विशेष रूपसे माना जाता है, क्योंकि अज्ञेयने ही सर्वप्रथम दूसरे सप्तक में नयी कविता के लिए "नयी कविता" शब्द का प्रयोग किया था ।

नई कविता आज की समस्त विसंगतियों और विडंबनाओं को युगानुरूप अभिव्यक्त करनेमें बेहेत्तर साबित हुई है । उसने समकालीन जीवन-यथार्थ को बडी गंभीरता और दायित्वपूर्ण तरीकेसे उकेरने की स्थिति बनाई । फलत: नए कवियोंने जिंदगी की असलियत से सीधा संवाद-जिरह स्थापित किया ।

नई कविता अपनी बदलती हुई मुद्रा की परख के लिए आलोचना के नए तेवर और प्रति-मानों की मांग करती है क्योंकि अभी भी कुछ आलोचकोंका रुख नयी कविता के प्रति अवज्ञा और विरोध का है । उनकी मानसिकता रोटी, हडताल और राजनीति को कविता का विषय माननेसे इंकार करती रही । युगकी नब्ज की पकड रचनाकार के लिए अनिवार्य है ।

आ.नंददुलारे वाजपेयी को भी कहना पडा है कि नई कवितामें समरसता आ रही है, जो एक शुभ-लक्षण है । नई कविता आज की जिंदगी की कडवी, जटिल एवं भयावह सच्चाईयों को उकरने एवं समकालीन यथार्थ के उद्घाटन का प्रामाणिक दस्तावेज है । उसकी अनुभूति और अभिव्यक्तिमें इतना गहरा तालमेल रहा है कि जीवन के काठिण्य एवं वैविध्य को सहज संप्रेष्य बना दिया है ।

उस दिशामें नयी कविता के नए कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेनाजी का प्रयोजन नयी कविता की संपूर्णता को पहचानने की ठोस एवं कारगर पहल है तथा उसके सही समीक्षात्मक विवेचना देने की शक्ल में गूँगे के मुँह में जुबान डालने की लगातार कोशिश है । यह मानने की इच्छा तो होती है कि नयी कविताके प्रवाह में कुछ ऐसी रंगत जरूर है जो अलग से पहचान में आ रही है, यह पहले भी थी, पर तब उसकी ओर ध्यान नहीं था । आज की पीढी उसे रेखांकित करके बारबार दिखा रही है । यह दिखावा ही उसे पनपने नहीं दे रहा है । रही अलगसे पहचानवाली रंगत की बात वह नयी कविता से ही फूटी है ।

नयी कविता बहु आयामी है । उसके सभी आयाम खुल गए हैं । अभी ऐसा दावा करना थोडी जल्दबाजी लगती है क्योंकि हमने आजतक नयी कविता की बात तो की है लेकिन नयी कविता के एक एक रचनाकार को लेकर बात करना शेष है । सर्वेश्वर जैसे शक्तिवान कविके सृजन का मूल्यांकन अभी तक नहीं हुआ है । उनका नयी कवितामें मूल्यबोध कहाँ है ? इसका विस्तृत विश्लेषण भी नहीं हुआ है, अत: सर्वेश्वरकी कविताओंको मैंने अपने ढंग से सोचा है । आप इसे पसंद करेंगे । प्रत्येक क्रांतिदर्शी कवि अपने समय का संदेशवाहक होता है । कविका काम तत्कालीनता को समर्थ आयाम देने के साथ भविष्य को भी एक नए रूपमें परिवर्तित करनेका है । वर्तमान मूल्यों में परिवर्तित की नई दिशा निर्मित करनेवाले कवि भी सही अर्थों में आधुनिक साहित्य को गत्यात्मक बनाने के लिए प्रतिश्रुत होता है ।

सर्वेश्वर ने आधुनिक हिंदी कविता को एक नया संदर्भ सहजभाषा तथा रूढियोंसे विद्रोह की चेतना प्रदान की है । सर्वेश्वर की कविताने हिंदी काव्य को जो बौध्दिक और सामाजिक चेतना प्रदान की है और कविता को जनसमाज के निकट लानेका प्रयत्न किया है ।

मैंने सर्वेश्वर दयाल सक्सेनाजी की काव्य रचनाओंको तटस्थ दृष्टिमें देखने की चेष्टा की है, परंतु उनकी नवीन उद्भावनाओं और अभिनव भाव-दिशाओंका निरूपण करने में सहानुभूति और प्रशंसा में कमी नहीं की है ।

जब प्रयोगवाद और नई कविता दोनों किसी-न-किसी बिंदुपर एक हो गए, युवा कवियोंने नए नामोंका मेला ही लगा दिया । उसमें सर्वेश्वर के साहित्यिक समग्र रूपसे कोई समीक्षात्मक आकलन अभी तक नहीं हुआ है । इसीलिए प्रस्तुत विषय को मैंने अपने अध्ययन का क्षेत्र चुना है ।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध सात अध्यायोंमें विभाजित हैं जिसमें सर्वेश्वर दयाल सक्सेनाजीके समग्र साहित्य के साथ व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परामर्श हैं । प्रथम अध्याय में सर्वेश्वरजी के जीवन-वृत्त के साथ साथ उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय दिया गया है । दूसरे अध्याय में व्यक्ति-वाद की विविध व्याख्याओंका अनुशीलन कर उसके स्वरूप का सम्यक उद्घाटन किया है । साथ ही सर्वेश्वरजी के व्यक्तिवादी रुपके दर्शन मिलते है, साथ ही उनकी कविताओंमें व्यक्तिवादी रुपका परामर्श किस प्रकार हुआ है, उसका समर्थन पाया जाता है । तीसरे अध्याय में नयी कविता की विषय वस्तु या अनुभूति की भाव-प्रवणता का मूल्यांकन हुआ है । भाव-प्रवण कविका रेखांकन उभर आया है तथा विविध भावोंके विविध रंग इसमें दिखाई देते है । चतुर्थ अध्यायमें सक्सेनाजी के आधुनिक समसामयिक चेतना के कवि का विस्तार से परिचय मिलता है । तथा उनकी कविताओंमें चेतना का किस प्रकार समावेश हुआ है, इसका समर्थन पाया जाता है । पंचम अध्याय में सर्वेश्वर का व्यंग्य कवि का अधिक सफलतम रुप निखर आया है । अनेक प्रकार के व्यंग्योंका परिचय उनके कविताओं की खास विशेषता है । षष्टम अध्याय में उनकी भाषाशैली एवं काव्य सौष्ठव का रूप दिखाई देता है । लघु आकारवाले अंतिम अध्याय में नयी कविता में सर्वेश्वरजी की संभावनाओंपर विचार किया गया है । यही समापन है ।

मेरे निर्देशक,छत्रपति शिवाजी के स्नातकोत्तर हिंदी विभागके डॉ.शिवाजीराव निकमजी की शोध कामके समुचित एवं संतुलित संशोधन एवं निर्देशनमें उनकी लगन ही उतनी ही महत्त्वपूर्ण रही है । पग-पगपर मुझे मार्गदर्शन तथा प्रोत्साहन मिलता रहा है । उनके विद्वतापूर्ण निर्देशनमें यह लघु-शोध-प्रबंध लिखा गया है । उन्हीं की प्रेरणा,शुभाशंसा का प्रतिफल सह शोधकार्य है ।

इस शोध-संकल्प की पूर्तिमें जिनसे मुझे प्रोत्साहन मिला उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करना मैं अपना पूनित कर्तव्य मानती हूँ। लाल बहादूर शास्त्री महाविद्यालयके हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ.जी.एस्. सुर्वेजी तथा प्राचार्य अमरसिंह राणेजी और शिवाजी विश्वविद्यालय एवं राजश्री शाहू महाविद्यालयके हिंन्दी विभागाध्यक्ष डॉ.व्ही.के.मोरेजी के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ जिन्होने मुझे निर्देशन पुस्तकीय सहायता-सामग्री संवर्धनमें सहयोग दिया है । उन सबकी ज्ञान-गरिमाने मुझे यह शोध कार्यको संपन्न करने की प्रेरणा दी ।

छत्रपति शिवाजी कॉलिजके प्राचार्य आर.डी.गायकवाडजी का प्रोत्साहन मुझे मेरा कार्य संपन्न करनेमें अपूर्व रहा है उनके प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ ।

बचपन से मुझे जो प्रेरणा मिली वह मेरे परमपूज्य पिता श्री विष्णूपंत गोपाळराव निकाळजेजी से । उनका प्रोत्साहन मेरा प्रबंध पूरा करने के लिए प्रेरणादायी रहा है । नवबंर 1992 में वे स्वर्ग सिधारे । उनकी बडी इच्छा थी कि वे मेरे इस कार्यको पूरा होते देखे - पर अपना चाहा कभी पूरा होता है ? उनकी चिरंतन स्मृति मुझे हमेशा याद दिलाती रहेगी । उनके कारण ही मैं मेरा यह कार्य सफल कर सकी हूँ ।

मेरे इस लघु-शोध-प्रबंध को पूरा करने में मेरे पति छत्रपति शिवाजी कॉलिजके हिंदी विभागाध्यक्ष एस.डी.आढावजी के सहयोग का मेरे लिए बहुत अधिक मूल्य है जिसे मैं शब्दोंमें नहीं व्यक्त कर सकती,यह भी तय है कि इस सहयोग के बिना यह कार्य पूरा नहीं हो सकता था ।

छत्रपति कॉलिज तथा लाल बहादूर शास्त्री कॉलिज,सातारा के ग्रंथपालों का शुक्रिया अदा करना मैं अपना कर्तव्य मानती हूँ ।

इस लघु-शोध-प्रबंध में मेरी सहाध्यायी प्यारी सहेलियोंने सर्वत्र भाँति इसमें भी सहयोग दिया है । पगपगपर प्रोत्साहित किया-प्रेरणा प्रदान की वह है प्रा.सौ.पौर्णिमा मोटेजी तथा प्रा.सौ.अलका देसाई-चव्हाणजी । उनके आत्मीयता पूर्ण योगदान के प्रति हृदय के गहनतल से आभार प्रकट करना मात्र औपचारिकता होगी । साथ ही अॅडव्होकेट माने तथा प्रा.सौ.मानेजी का भी प्रोत्साहन मिला है ।

जिनके प्रति मेरी संपूर्ण श्रध्दा विनयागत है,उनके साथ ही उन सभी नए कवियों,लेखकों की पुस्तक-रचनाओं की आभारी हूँ जिनसे मैंने किसी-न-किसी रूपमें सामग्री ग्रहण की है ।

इस लघु-शोध-प्रबंध के सुरुचिपूर्ण टंकण के लिए सौ.अंजली सायगांवकर,सातारा धान्यवाद के पात्र है ।